Shri Baglamukhi Divya Sadhana

श्रीबगलामुखी दिव्य साधना

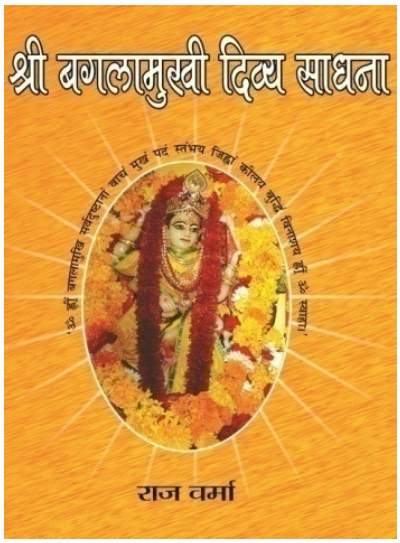

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

साधक का सत्य अनुभव- सम्पूर्ण सृष्टि में स्थित प्रत्येक मनुष्य या जीव, सब अपना अलग-अलग भाग्य लेकर जन्म लेते हैं जिसे विधाता ने उसके कर्मों के अनुसार न्याय की लेखनी से लिखा होता है। साधनाक्षेत्र में भी प्रारब्ध की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। कुछ साधक ऐसे होते हैं जिन्हें मंत्र ग्रहण करने के कुछ समय बाद ही स्वप्न में अपने इष्टदेव के दर्शन एवं अन्य दिव्य अनुभूतियां होनी शुरु हो जाती हैं और मनोवांछित कार्य भी पूर्ण हो जाता है। पूर्वजन्म में देवोपासना से विशेष सम्बन्ध होने के कारण ही इस प्रकार का साक्षात्कार होता हैं। इसके विपरित कुछ मनुष्यों को कई अनुष्ठान करने के बाद भी इष्टदेव की कोई अनुभूति नहीं होती तथा किसी संकटकाल से भी शीघ्र मुक्ति नहीं मिलती। इसका कारण उनके पूर्वजन्म के अपने प्रबल पाप कर्म ही होते हैं। अथवा वर्तमान काल के पापकर्म भी हो सकते हैं जिनको तप, दान तथा धर्माचरण के माध्यम से स्वाहा करने के उपरान्त् ही शांति मिलती है। इसके लिये कितने ही अनुष्ठान करने या करवाने पड़ सकते हैं। संसार में अच्छा या बुरा कुछ भी बिना किसी कारण के नहीं होता। इसलिये साधक निराश न होते हुए मंत्र के प्रवाह को निरन्तर तेज करता जाये। दुर्भाग्य की दीवार कितनी मजबूत क्यों न हो निरन्तर मंत्रप्रहार से उसका भेदन अवश्य होता है। एक दिन देवता को

अपने भक्त की भक्ति में विवश होकर उसके मंत्ररूपी ऋण का फल देने आना ही पड़ता है। मंत्र से बड़ा रक्षक, मित्र और गुरु संसार में कोई नहीं है, परन्तु वह आपसे मित्रता भी आपके कर्मों एवं भावना के अनुसार ही करेगा। मंत्र देवता या गुरु को बार-बार बदलने से स्वयं को ईश्वर की दृष्टि में लोभी और स्वार्थी सिद्ध न करें, क्योंकि सभी देवताओं का संविधान एक ही है।

मेरे पास कई लोगों के फोन आते हैं और मुझसे कहते हैं कि हमें कोई योग्य गुरु नहीं मिला हम साधना कैसे करें? उन लोगों से मैं सिर्फ यही कहता हूं- अगर आपको द्रोणाचार्य, विश्वामित्र या परशुराम जैसा विशिष्ट गुरु चाहिये तो पहले आप करण, अर्जुन और एकलव्य जैसे महान् शिष्य बनिये, फिर देखिये सद्गुरु का मिलन आपसे कैसे होता है। आप एक अच्छे इंसान, भक्त और शिष्य बनकर देखिये। देवता, गुरु और मंत्र स्वयं आपका मार्गदर्शन करेंगे, स्थूल रूप से या सूक्ष्म रूप से। यह मेरा अटल विश्वास एवं अनुभव है। गुरु सेवा का भव्य तिलक जिसके ललाट पर विराजमान हो, ईश्वर भक्ति का पवित्र काजल जिसके नैनों में विद्यमान हो, धर्म एंव गम्भीरता रूपी दिव्य चादर जिसकी ओढ़नी हो तथा धैर्य एवं विश्वास की अनमोल माला जिसके कण्ठ में सुशोभित हो, उस विशिष्ट साधक के दर्शन हेतु स्वयं देवता व्याकुल रहते हैं। जब मनुष्य को प्रारब्धानुसार दुःखों का भोगना, यही दैवीय इच्छा होती है

तब मनुष्य को योग्य गुरु या मार्ग प्राप्त ही नहीं होता अथवा होते हुए भी वह उन्हें पहचान नहीं पाता।

इसके अतिरिक्त मनुष्य अपनी प्रत्येक इच्छा को देवता के कांधे पर न डाले। जैसे- अमुक स्त्री या पुरुष से विवाह, वशीकरण, अमुक शत्रु का नाश, उच्चाटन आदि। आपका देवता महान् है, आपका मंत्र भी महान् है तो आपको और आपकी इच्छाएं भी महान् होनी चाहियें। दो आंखों और अल्पबुद्धि के माध्यम से हम जितना देख या जान सकते हैं, हजारों आंखों वाले सर्वज्ञ ईश्वर हमारे हित की बात उससे भी अधिक अच्छी तरह देख और जान सकते हैं। इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिये। तुम स्वयं को साधनारूपी समुद्र में डुबा दो। सुख-दुःख परवाह न करते हुए हिम्मत और धीरज रखना, प्रभु अपने दयारूपी जहाज को लेकर सदा तुम्हारे साथ है।

उच्चशास्त्रों में षटकर्मों को सिद्ध करने की आज्ञा अति अनिवार्यता में ही कही गयी है, क्षुद्र कार्यों की पूर्ति के लिये कदापि नहीं। मंत्ररूपी ऊर्जा को छोटे उद्देश्य की पूर्ति में लगाने से देवता कुपित होते हैं और मंत्र की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। मांगने वाले साधक की अपेक्षा कुछ न मांगने वाले साधक को परमात्मा से दुर्लभ फल की प्राप्ति होती है। सर्वश्रेष्ठ शास्त्रों

में देवोपासना का वास्तविक लक्ष्य मोक्ष-मुक्ति अथवा देवदर्शन कहा गया है। जिसने अपनी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर लिया है, अपना मनुष्य जीवन सफल बना लिया है, वास्तव में वही बालिग है, अन्य सब नाबालिग ही हैं। जैसे- बालक बाल्यावस्था में अज्ञानवश अपने माता-पिता से कोई भी ख्वाइश पूरी करने की जिद्द करता है पर क्या माता-पिता उसकी हर इच्छा को पूरा कर देते हैं, बिल्कुल नहीं। जो उसके लिये हितकारी और जिसे वास्तव में पूरा करना सम्भव होता हैं केवल उसी इच्छा को ही पूरा करते हैं और बाकी उसका बचपना समझकर हंसकर टाल देते हैं। हम लोग भी ईश्वर से वैसा ही व्यवहार करते हैं और ईश्वर भी जितनी हमारी आवश्यकता और योग्यता है उतना प्रदान करते हैं और निःसन्देह अन्य इच्छाओं को सुनकर हंसकर टाल देते होंगे। परम आवश्यकतानुसार कार्य जैसे- प्रेतबाधा, शत्रुबाधा, रोग अथवा दरिद्रता आदि विकट परिस्थितियों में देवता अपने भक्त की सच्ची पुकार अवश्य सुनते हैं, क्योंकि तब वह बेचारा वास्तव में संकट में होता है। कुछ संकट वास्तव में संकट नहीं होते वह केवल मनुष्य की मन की इच्छाओं की उपज होती है जिसके कारण मनुष्य सुखशांति से जी नहीं पाता।

शिशु जब माता के गर्भ में स्थित होता है तब ही ब्रह्माजी उसका भाग्य लिख देते हैं फिर थोड़े बहुत मंत्रों के प्रभाव से

देवता उसके भाग्य में उल्टफेर कैसे कर सकते हैं? भाग्य से अधिक या विपरित मांगने से केवल निराशा ही मिलती है। अगर भाग्य से अधिक या विपरित लेना चाहते हो तो महाजप रूपी कठोर तपश्चर्या करनी होगी, ठीक उसी प्रकार जैसे लहरों के विपरित कश्ती चलाना। जितना गम्भीर कार्य होगा उतनी ही गम्भीर तपश्चर्या करनी होगी। जिस प्रकार किसी व्यंजन में एक भी सामग्री कम रह जाये तो उस व्यंजन के स्वाद में कमी रह जाती है, उसी प्रकार मनुष्य के नित्य आचरण में भी कोई दोष होगा तो देवता से प्राप्त पूजा फल में भी कमी होगी। शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण और ज्योतिष- इन छः अंगों सहित अध्ययन किये हुए वेद भी आचारहीन मनुष्य को पवित्र नहीं करते। मृत्युकाल में आचारहीन मनुष्य को वेद वैसे ही छोड़ देते हैं, जैसे पंख उगने पर पक्षी अपने घोंसले को- मनुस्मृति। दूसरे का अन्न खाने से जिसकी जीभ जल चुकी है, दूसरे का दान लेने से जिसके हाथ जल चुके हैं और दूसरे की स्त्री का चिंतन करने से जिसका मन जल चुका है, उसे जप, तप आदि करने से सिद्धि कैसे मिल सकती है।

अगर हर परिस्थिति में हर व्यक्ति पर वशीकरण कार्य सिद्ध हो जाये तो तांत्रिक लोगों का ही इस भूमण्डल पर एक छत्र राज हो जायेगा। वह अपनी विद्या से पैसा, स्त्री के अतिरिक्त हर इच्छित वस्तुओं को अन्य लोगों से अर्जित कर लेंगे, परन्तु ऐसा कुछ नहीं है। देवता ही अगर धर्म-अधर्म को परखें बिना ही

मंत्रों के प्रभाव से हर कार्य सिद्ध करते जायेंगे तो फिर हममें और देवताओं में क्या फर्क रह जायेगा? जब मैं 14 साल का था तब एक बंगाली मुसलमान व्यक्ति ने शत्रुताभाव से बंगाल के मौलवी द्वारा मुझ पर तीन बार मारण प्रयोग करवाया था। रात्रिकाल में एक भयानक शक्ति मुझे भंयकर तरीके से डराती थी और मेरे आस पास सुबह खून के छींटे होते थे, परंतु मेरी कुण्डली में शनि महाराज के प्रभाव से दीर्घायु योग बनता है इसलिये उसका यह कुप्रयोग सफल नहीं हो सका, परन्तु उस समय मेरे व्यापार (स्वर्णकार) में काफी नुकसान हुआ और रात्रि में मेरा सोना भारी हो गया था। तब गुरु आज्ञा से मैंने माता बगलामुखी और विपरित प्रत्यंगिरा के विधिवत् जप किये। इसके प्रभाव से मेरी समस्त बाधाएं एक सप्ताह से पूर्व ही ठीक हो गयी और प्रयोगकर्ता बंगाली शारीरिक और आर्थिक रूप से टूटना शुरु हो गया। जब हालत काफी खराब हो गयी तब उसने मुझसे माफी मांगते हुए अपने मंत्र प्रयोग को बन्द करने की विनती करी।

मेरे अनुभव से वशीकरण, मारण, स्तम्भन आदि कार्य तभी कारगर होते हैं जब प्रयोगकर्ता मनुष्य की कुण्डली में ग्रहदशा अत्यन्त मजबूत हो और जिस पर प्रयोग किया जा रहा है उसकी ग्रहदशा उसके अनुकूल न हो। इसके अतिरिक्त प्रयोगकर्ता धर्मरथ पर स्थापित हो तब भी देवता बिना वशीकरण आदि मंत्रों के भी अपने भक्त का आवश्यक कार्य अवश्य सिद्ध

करते हैं। इसके अतिरिक्त यक्षिणी, योगिनी, वेतालादि की सिद्धि करने वाले बालक भी यह बात भली भांति समझ लें- इस प्रकार की विशिष्ट सिद्धि प्राप्त करने वाले मनुष्य के ग्रहों के योगदान के बिना वह इस प्रकार की सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकते। अर्थात् ऐसे व्यक्तियों की जन्मकुण्डली में इस प्रकार की सिद्धियों के योग निश्चित रूप से बन होते हैं। एक दिन या एक माह में ऐसी सिद्धियां सिद्ध नहीं होती।

हम जन्म से लेकर लगभग 25 साल तक पहले स्कूल फिर कालेज में नित्य लगभग सात आठ घंटे पढ़ते हैं। तब जाकर हमें कोई डिग्री या नौकरी मिलती है, परन्तु साधनाक्षेत्र में ईश्वर से कोई डिग्री अर्थात् सिद्धि प्राप्त करने के लिये हम नित्य कितना समय, कितने वर्षों तक देते हैं इसका उत्तर हम सबके पास है। साधनाक्षेत्र में हर व्यक्ति को उसकी योग्यतानुसार ही सिद्धिलाभ होता है क्योंकि ईश्वर के दरबार में रिश्वत या राजनीति नहीं चलती और न ही वहां कोई भेदभाव होता है। अधिकारिक पुरुष को ही फल की प्राप्ति होती है। देश, काल, मंत्र, देवता, गुरु और सृष्टि की हर वस्तु उस अधिकारिक पुरुष को दैवीय इच्छा से हर आवश्यक सहायता प्रदान करती है। सत्य कड़वा अवश्य लगता है परन्तु सत्य को स्वीकार करने में ही सबका भला है। मैं अपने 16 वर्षों की साधना के अनुभव के आधार पर यह आध्यात्मिक अध्याय

आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। जिससे सहमत होने या होने का आपको पूर्ण अधिकार है।

तंत्रसाधना में दीक्षा की अनिवार्यता– 'दीक्षा' समस्त जप एवं तपश्चर्या का मूल है। परमात्मा के साथ जिस प्रकार ब्रह्माण्ड का सम्बन्ध है, गुरु के साथ उसी प्रकार क्रियायोग का सम्बन्ध है। गुरुप्राप्त मन्त्रों के पुरश्चरणों के ज्ञानमात्र से भाग्यहीन मूर्ख भी अमर हो जाता है। इतना ही नहीं, वरन् समस्त सिद्धियों को प्राप्त करके वह सिद्धीश्वर हो जाता है इसलिये पहले नियमपूर्वक यथाविधि साधक बगला मंत्रों का पुरश्चरण करे, तब ही मंत्री अपने मंत्र का प्रयोग करने के योग्य होता है। जाग्रत किये बिना मंत्र प्राणहीन हैं। साधक, पुस्तक और इन्टरनेट से देखकर मंत्रजप तो कर सकता है परन्तु साधनाकाल के अन्तर्गत आने वाले विघ्न व्याधियों और दैवीय संकेतों का उत्तर तो केवल अनुभवी गुरु ही दे सकता है। इसके अतिरिक्त हमारे शास्त्रों में कुछ विस्तृत विधान ऐसे हैं जिनको आज के समय में पूर्ण नहीं किया जा सकता है, उनका विकल्प भी सुयोग्य गुरु के पास होता है।

मंत्रसाधना के सोलह महत्वपूर्ण अंग- चन्द्रमा की षोडश कलाओं की भांति साधनाकर्म में भी सोलह आवश्यक कर्म कहे गये हैं जिनकों गुरु के सान्निध्य में ग्रहण करने से साधना में शीघ्र सफलता मिलती है। शास्त्रों में इन सोलह अंगों का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

1-भक्ति- भक्ति अर्थात् इष्टदेव की सेवा। भक्तिसेवा की कई भव्य कथाएं पुराणों एवं शास्त्रों में वर्णित हैं। भक्तिसेवा के तीन भेद हैं।

कायिक, वाचिक एवं मानसिक। अर्थात् कर्म से, जिह्वा से और मन से देवोपासना करना।

कायिक- पाद्य, अर्घ्य, स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्पित करना।

वाचिक- देवता की मंत्रस्तोत्रपाठ करना।

मानसिक- चलते-फिरते हर समय मानसिक रूप से मंत्रजप करना एवं सात्विक विचारों को उदय करना।

2-शुद्धि- साधना-स्थान, शरीर एवं अन्तः शुद्धिकरण। शरीर पर एक बार श्रद्धापूर्वक वैराग्यरूपी मृत्तिका का लेपन करके आत्मज्ञानरूपी जल में स्नान करके शुद्ध हो जाने को ही

अन्तःशुद्धि कहा गया है। आन्तरिक पवित्र मनुष्य को ही सिद्धियां मिलती हैं, अपवित्र को कभी नहीं। सदा जल में रहने वाले जीव (मगरमच्छ और मछली आदि) भी क्या कभी पवित्र हुए हैं? इसलिये सदा विधिपूर्वक आन्तरिक पवित्रता का सम्पादन करने का प्रयास करना चाहिये।

3-आसन- कामनानुसार आसन का चयन करना। जैसे- स्वस्तिकासन एवं पद्मासन। इसके अतिरिक्त जिस आसन पर साधक बैठता है। जैसे- कम्बल या कुशासन।

4-पंचागसेवन- इष्टदेव की गीता, सहस्रनाम, स्तव, कवच एवं हृदय- इन्हें बुधगण पंचाग कहते हैं।

5-आचार- दक्षिणाचार एवं वामाचार साधना के दो सम्प्रदाय हैं। किसी भी आचार में सदाचार का होना अत्यावश्यक है।

6-धारणा- बाह्य एवं आभ्यन्तर भेद से धारणा के दो प्रकार हैं। मन को धार्मिक विचारों एवं कार्यों में स्थिर रखना एवं इष्टदेव सहित मंत्र को अपने हृदयस्थल में स्थापित करना। भक्ति, आचार, जपसिद्धि, देवतासान्निध्य, दैवीयशक्ति का आविर्भाव, देवदर्शन- पवित्र धारणा सिद्धि के माध्यम से ही प्राप्त होती है। साधक की धर्म, गुरु, देवता और मंत्र के प्रति जैसी धारणा होगी वह देवता से वैसा ही फल प्राप्त करेगा। चित्त को किसी

स्थान विशेष में बांधना- किसी ध्येय विशेष में स्थिर करना- यही संक्षेप से 'धारणा' का स्वरूप है। किसी नियमित कालतक स्थानस्वरूप देवता में स्थापित हुआ मन जब लक्ष्य से च्युत न हो तो धारणा सिद्धि समझनी चाहिये। मन धारणा से स्थिर होता है, इसलिये धारणा के अभ्यास से मन को धीर बनाये। धारणा सिद्धि के लिये अनेक स्थूल एवं सूक्ष्य क्रियाएं मंत्रशास्त्रों में वर्णित हैं।

7-दिव्यदेश- तंत्र में दिव्यदेश के षोडश प्रकार इस प्रकार वर्णित हैं। यथा- वह्नि, अम्बु, लिंग, स्थण्डिल, कुण्ड, पट, मण्डल, विशिख, नित्ययंत्र, भावयंत्र, पीठ, विग्रह, विभूति, नाभि, हृदय और मूर्द्धा। साधक योग्यतानुसार इन दिव्यदेशों में उपासना का अधिकार प्राप्त करते हैं।

8-प्राणक्रिया- प्राणायाम के अतिरिक्त शरीर के अन्य स्थानों में प्राण को ले जाकर साधना करने को प्राणक्रिया कहते हैं। न्यासादि इसी के अन्तर्गत आते हैं।

9-मुद्रा- साधनाकर्म में इष्टदेव को प्रसन्न करने के लिये उनके अनुरूप मुद्राओं का प्रदर्शन करना।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

10–तर्पण– कार्यानुसार तरल पदार्थ से देवता को तर्पण करना। इष्ट तर्पण के बाद प्रमुख देवता तर्पण, ऋषि तर्पण एवं पितृतर्पण का विधान है।

11–हवन– जिस प्रकार जप के बिना मंत्रसिद्धि नहीं होती, उसी प्रकार हवन के बिना फल प्राप्त नहीं होता। देवता को उद्देश्य कर अग्नि में द्रव्य का प्रक्षेप करने को हवन कहा जाता है। भगवान् शिव कहते हैं होम या हवन अपने यथार्थ स्वरूप में उस क्रिया का नाम है जहां बोधभैरव रूपी चिदग्नि में पंचमहाभूत, इन्द्रियगण, विषय, भुवन तत्त्व एवं संकल्प–विकल्पात्मक समस्त जगत् को मन के समेत समर्पित करके भस्म कर दिया जाता है।

12–बलि– इष्टदेव के पूजन में विघ्नशान्ति के लिये बलि प्रदान की जाती है। सर्वप्रकार की बलियों में आत्मबलि ही सर्वश्रेष्ठ है। जैसे– आन्तरिक विकारों– काम, क्रोध, लोभ, अंहकारादि का प्रयत्नातापूर्वक त्याग करना।

13–याग– अन्तर्याग और बहिर्याग भेद से याग दो प्रकार के होते हैं। अन्तर याग में सारी पूजन क्रियायें मानसिक एवं कल्पना प्रसूत होती हैं और बहिर्याग में बाह्य पूजन पद्धति।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

14-जप- देवता के मंत्र का निरन्तर सब अवस्थाओं में दृढ़तापूर्वक जप करना।

15-ध्यान- ध्यान के समान कोई तीर्थ नहीं है, ध्यान के समान कोई तप नहीं है और ध्यान के समान कोई यज्ञ नहीं है। जिस-जिस रूप में देवता की छवि मन में स्थिर हो, उस-उसका बारंबार ध्यान करना चाहिये। अपने इष्टदेवता का ध्यान भ्रुकुटी में साधते हुए साधना सम्पन्न करने का प्रयास करना चाहिये। आदि और अन्त दोनों में ही देवता का ध्यान किया जाना चाहिये।

16-समाधि- ध्यान की सर्वोच्चावस्था में जब साधक स्वयं का अस्तित्व भूलकर ध्यानावस्था में स्थिर हो जाये, उस परमावस्था को समाधि या महाभावसमाधि कहते हैं। इस अवस्था में जो कुछ साधक सुनता है उसे मांस के कान सुन नहीं सकते, वह जो देखता है उसे मांस की आंखे नहीं देख सकती और जो वह समझता है उसे मांस का दिमाग समझ नहीं सकता। विक्षेपरहित चित्त से बारंबार परमात्मा का चिन्तन करने को ही 'ध्यान' कहा जाता है। जो ज्ञान और वैराग्य से सम्पन्न, श्रद्धालु, क्षमाशील, ममतारहित तथा सदा उत्साह रखने वाला है, ऐसा ही पुरुष ध्याता कहा गया है। साधक को चाहिये कि जप से थकने पर

ध्यान करे और ध्यान से थक जाने पर पुनः जप करे। इस प्रकार जप और ध्यान में सुस्थिर होने पर मनुष्य को योग अति शीघ्र सिद्ध हो जाता है। बारह प्राणायामों की एक धारणा, बारह धारणाओं का ध्यान और बारह ध्यान की एक समाधि होती है। समाधि को योग का अन्तिम अंग कहा गया है। समाधि से सर्वत्र बुद्धि का प्रकाश फैलता है। ध्यानस्वरूप से शून्य हो जाने को समाधि कहते हैं। वह न सूंघता है, न बोलता है, न देखता है, न स्पर्श का अनुभव करता है, न उसमें अभिमान का अंश रहता है और न ही देह बुद्धि के द्वारा वह कुछ समझता है। केवल काष्ठ की भांति स्थित रहता है। जैसे वायुरहित स्थान में रखा हुआ दीपक कभी हिलता नहीं है, उसी प्रकार समाधिनिष्ठ शुद्ध चित्त योगी भी उस समाधि से कभी विचलित नहीं होता है।

महाविद्या बगलामुखी के महाप्रयोंगों का संक्षिप्त फल- इनकी उपासना से जपानुसार पापकर्मों का नाश, उपद्रवों की शान्ति, कारागृह से मुक्ति, मृत्युसंकट से त्राण, असाध्य रोग एवं परप्रयोग निवारण, महाअस्त्रों एवं क्रूर ग्रहों की मारक दशा से रक्षा, दुःख-दरिद्रता-दुर्भाग्य के नाश एवं महालक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त इनकी तंत्रोक्त उपासना से व्यक्ति में

विलक्षण प्रतिभा एवं तेज की वृद्धि होती है तथा वास्तविक दुष्ट शत्रुओं का स्वतः संहार होता है।

श्रीबगलामुखी अंगदेवता– प्रत्येक देवता के साथ उनके अंगदेवता के दशांश मंत्रजप करना तंत्रशास्त्रों में अनिवार्य रूप से कहा गया हैं। धनधान्य, राज्यलाभ हेतु स्वर्णाकर्षणभैरव एवं श्रीहरि, परप्रयोग एवं रोगनिवारण हेतु हनुमानजी, आकाशभैरव या मृत्युंजय तथा साधना में शुभता, वशीकरण एवं स्तम्भन हेतु हरिद्रा गणेश की साधना भगवती पीताम्बरा के साथ त्वरित फल प्रदान करती है।

हरिद्रागणपतिमंत्र– 'ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वर वरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय-स्तम्भय स्वाहा।'

त्र्यम्बकमंत्र– 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।'

क्रोधभैरवमंत्र– 'ॐ हुं वज्र फट् क्रुं क्रों क्रुं क्रुं हुं हुं फट्।'

पशुपतिमंत्र– 'ॐ श्लीं पशुं हुं फट्।'

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

स्वर्णाकर्षण भैरवमंत्र– 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।'

पक्षिराजमंत्र– 'ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहसि-प्राणग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभसालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।'

शिवलिंगस्नान– वशीकरण कर्म में घृत व शहद से, शांति कर्म व मृत्युंजय जपादि कर्म में दूधादि से, आकर्षण कर्म में शहद से एवं क्रूर कर्म (अकृत्य कर्म) में भस्म राख से स्नान कराने का विधान है।

भगवती पीताम्बरा संक्षिप्त परिचय– स्वतंत्रतंत्र के अनुसार सत्ययुग में एक भीषण तूफान उत्पन्न हुआ जिसके उत्पात से सम्पूर्ण सृष्टि पर संकट छा गया। सृष्टि के पालनहार भगवान् विष्णु भी उस वातक्षोभ को शान्त न कर सके। तब सृष्टि की रक्षा हेतु श्रीहरि ने सौराष्ट्र में हरिद्रा नामक सरोवर पर महात्रिपुरसुन्दरी की तपस्यारम्भ की। विष्णुजी की तपस्या से भगवती त्रिपुरसुन्दरी प्रसन्न होकर प्रकट हुई। तब महात्रिपुरसुन्दरी के हृदयस्थल से एक दिव्य तेज उत्पन्न हुआ। इस महातेज से प्रकट होकर भगवती पीताम्बरा ने उस भीषण

तूफान का स्तम्भन किया। मंगलवार के दिन चतुर्दशी तिथि को मकारकुल नक्षत्रों का योग होने पर अर्द्धरात्रि (वीररात्रि) के समय इनका आविर्भाव हुआ। यह विद्या विष्णु जी के स्मरण पर प्रकट हुई इसलिये इन्हें वैष्णवी भी कहा जाता है। अतः धन धान्य एवं सौभाग्यादि वृद्धि हेतु भगवती के साथ विष्णुजी की उपासना उत्तम फल प्रदान करती है।

साधकजन को इस घटना से यह प्रेरणा लेनी चाहिये कि भगवान् विष्णु द्वारा भगवती की उपासना तथा भगवती द्वारा तूफान का स्तम्भन, तत्काल समय और परिस्थिति के लिये परम आवश्यक था। इसी प्रकार भगवती अपने भक्तजनों की समय और परिस्थिति की परम आवश्यकता के अनुसार न्यायस्वरूप अवश्य सहायता करती हैं। किसी अधर्म या अनुचित प्रकार से सहायता मांगने पर मनुष्य को निराशा ही प्राप्त होगी। अपनी समस्त इन्द्रियों को अपने सेवक की भांति वश में करने की कामना से किये गये अनुष्ठान ही महानुष्ठान कहलाते हैं। जिसके फलस्वरूप साधक ईश्वर से वह सुधामृत प्राप्त करता है जिसे ग्रहण करने के पश्चात् आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं रह जाता। बुद्धिमान मनुष्य अपने को अजर-अमर मानकर विद्या और धन का उपार्जन करे तथा मृत्यु ने मेरे केश पकड़े हुए हैं- ऐसा जानकर सदा धर्म का आचरण करे।

महामाया बगला दसमहाविद्याओं में आठवीं विद्या कही जाती है। बगलामुखी, पीताम्बरा, स्थिरामुखी एवं ब्रह्मास्त्र विद्या इनके प्रमुख नाम हैं। इस विद्या के प्रथम उपासक ब्रह्माजी कहे गये हैं। इनके अतिरिक्त सनकादिक मुनि, शिवजी, विष्णुजी, परशुरामजी, च्यवनऋषि, नारदजी एवं सांख्यायन ऋषि आदि इस विद्या के प्रमुख उपासक रहे हैं। महर्षि च्यवन ने इसी विद्या के बल से इन्द्र के वज्र को स्तम्भित कर दिया था। गोविन्दपाद की समाधि में विघ्न डालने वाली रेवा नदी का स्तम्भन शंकराचार्याजी ने इसी विद्या के प्रभाव से किया था। महामुनि निम्बार्क ने किसी ब्राह्मण को नीमवृक्ष पर सूर्य का दर्शन इसी विद्या के प्रभाव से कराया था।

ये 'श्री' कुल की विद्या हैं। दक्षिणाचार एवं वामाचार दोनों मार्ग प्रचलित हैं। हरिद्रागणेश इस विद्या के गणपति हैं। भैरव- आनन्दभैरव अथवा मृत्युंजय। यक्षिणी- विडालिका एवं चेटिका- पाण्डवी है।

आम्नाय- उत्तराम्नाय एवं दक्षिणाम्नाय।

कुल्लुका- 'ॐ हूं क्ष्रौं' को 10 बार शिर पर जपना चाहिये।

सेतु- कण्ठ पर 10 बार 'ह्रीं स्वाहा' जपना चाहिये।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

महासेतु- 'स्त्रीं' को 10 बार हृदय पर जपना चाहिये।

निर्वाण- 'ह्रूं ह्रीं श्रीं' से सम्पुटित मूलमंत्र का जप निर्वाण विद्या है।

दीपन- मूलमंत्र को योनिबीज 'ईं' सम्पुटित करके 7 बार जपना चाहिये। पुरश्चरण या पर्वकाल में ही करणीय है।

जीवन- मूलमंत्र के अंत में 'ह्रीं ॐ स्वाहा' दस बार जप केवल पुरश्चरण में ही करणीय।

मुखशोधन- नित्य 'ऐं ह्रीं ऐं' से मुखशोधन का विधान है। दातून करने के पश्चात् जिह्वा पर जल संकेत से अनामिका द्वारा लिखें एवं दस बार जप करें।

उत्कीलन- मंत्र के पूर्व 'ॐ ह्रीं स्वाहा' मंत्र का दस बार जप करना चाहिये। यह भी पुरश्चरण में ही करणीय है।

इनकी उपासना में वस्त्र, तिलक, नैवेद्य, माला, पुष्प, चन्दन आदि समस्त सामग्रियां पीतवर्ण की निर्धारित हैं। शांतिपुष्टि कर्म उत्तर पूर्व दिशा में तथा संहारक प्रयोग आग्नेय कोण में प्रयोजनीय हैं।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

नक्षत्रों के अनुसार जप- अश्विनी नक्षत्र- एक हजार जप करने पर सिद्धि लाभ।

भरणी नक्षत्र- दो हजार करने से पूर्व फल।

कृत्तिका नक्षत्र- दो हजार जप करने से पूर्वोक्त।

रोहिणी नक्षत्र- एक हजार जप करने से कामनापूर्ति।

मृगशिरा नक्षत्र- पांच हजार जप करने से बुद्धि का विकास।

आर्द्रा नक्षत्र- छः हजार जप करने से समस्त कार्य सिद्ध हों।

पुनर्वसु नक्षत्र- एक हजार जप करने से देवत्व की प्राप्ति हो।

पुष्य नक्षत्र- सात हजार जप करने से सिद्धि।

आश्लेषा नक्षत्र- छः हजार जप करने से इच्छापूर्ति।

मघा नक्षत्र- दस हजार जप करने से अधिकार प्राप्ति।

पूर्वा नक्षत्र- ग्यारह हजार जप करने से धनलाभ।

उत्तरा नक्षत्र- बारह हजार जप करने से कामनापूर्ति।

हस्त नक्षत्र- तेरह हजार जप करने से तेजवृद्धि।

चित्रा नक्षत्र- दो हजार जप करने से कार्य सफलता।

विशाखा नक्षत्र- चार हजार जप करने से सौम्य स्वभाव हो।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अनुराधानक्षत्र- पूर्णकालतक जप करने से परिवारिक सुख मिले।

ज्येष्ठा नक्षत्र- दो हजार जप करने से मंत्र सिद्धि हो।

मूलनक्षत्र- पांच हजार जप करने से साधना में सफलता मिले।

श्रवण नक्षत्र- दो हजार जप करने से सर्व कार्य सिद्धि।

धनिष्ठा नक्षत्र- दो हजार जप करने से साधक यशस्वी हो।

शतभिषा नक्षत्र- दो हजार जप करने से पापों का नाश हो।

रेवती नक्षत्र- चार हजार जप करने से अधिकारों में वृद्धि हो।

संक्षिप्त पूजन विधि- स्नानादि कर देवस्थल में भगवती की प्राणप्रतिष्ठित प्रतिमा, यंत्र या चित्र के समक्ष कार्यानुसार दिशा की ओर मुख करके पीतासन पर मेरुदण्ड सीधा कर बैठ जाये। पूरक, कुम्भक, रेचक द्वारा अन्तः शुद्धिकरण कर पीली सरसों या शुद्ध घृत का दीपक प्रज्जवलित कर उसमें भैरवजी का ध्यान व पूजन करें। सरसों के तेल में एक लौंग का जोड़ा और घृत में केसर या अखण्डित अक्षत रख दें। 'दीपकज्योतिर्नमोस्तुते' बोलकर पुष्प अक्षतादि अर्पित कर कर्मसाक्षी दीपक का पूजन कर मस्तक पर पीतचन्दन या हरिद्राचूर्ण का तिलक लगाकर निम्न मंत्रों से आचमन करें-

'ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।' आचमन पश्चात् 'ॐ हृषीकेशाय नमः' बोलकर हाथ धोलें।

तत्पश्चात् निम्न मंत्र से देह एवं साधना स्थल के पवित्रीकरण हेतु अपने चारों ओर जल छिड़ककर मार्जन करें-

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।'

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

भावार्थ- कोई अपवित्र हो या पवित्र, किसी भी अवस्था में हो, जो कमलनयन भगवान् विष्णु का स्मरण करता है। वह बाहर और भीतर से सर्वथा पवित्र हो जाता है।

इसके बाद निम्नमंत्र से भूमि व आसन पूजन करें- 'ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देविं पवित्रं कुरु चासनम्।।

भावार्थ- हे पृथ्वी! तुम्हारे द्वारा लोक धारण किये गये हैं। तुम विष्णु के द्वारा धारण की गई हो। हे देवि! तुम मुझको धारण करो और इस आसन को पवित्र करो।

आसनपूजन- 'ॐ ह्रीं आधारशक्तये कमलसानाय नमः।'

मंत्रोच्चारण सहित पुष्पाक्षत् जलादि अर्पित कर भूमि व आसन पूजन करें। आसन के नीचे अर्पित किये जल को अपनी अनामिका अंगुली से अपने मस्तक पर लगाकर गुरु एवं गणेश का ध्यान एवं पूजनादि करें। वाम में गुरु का दाहिनी ओर गणपति का एवं मध्य में इष्ट देवता का ध्यान करें।

संकल्प– पूजनोपरान्त् भगवती के समक्ष अपने दायें हाथ में पुष्प, अक्षत, दक्षिणा एवं जलादि लेकर निम्न विधि से संकल्प लें।

'ॐ तत्सद्य परमात्मन् आज्ञया प्रर्वतमानस्य अमुक संवत्सरस्य श्री श्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे अमुक प्रदेशे, अमुक स्थाने, अमुक वासे, अमुक पक्षे, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नः, अमुक नामे, अहं श्रीभगवत्या पीताम्बरायाः प्रसाद सिद्धि द्वारा मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थं, यथा शक्ति, यथाज्ञानेन, यथासम्भावोपचारद्रव्यै यथोपलोब्धोपचारेण पूजनहं करिष्ये। हाथ में स्थित सामग्री को एक पात्र में छोड़ दें तथा स्थिर मन से भगवती के आंचल में बैठकर साधनारम्भ करें। जो साधक संस्कृत में संकल्प न ले सकें, वह हिन्दी या जिस भाषा की जानकारी रखता हो, उस भाषा में भी संकल्प पूरा सकते हैं। ईश्वर संसार की सभी भाषायें समझते हैं।

पूजन प्रकार– पूजनादि के कई उपचार शास्त्रों में वर्णित हैं। पंचोपचार एवं षोडशोपचार का प्रचलन मुख्य रूप से है। फिर भी जैसी शक्ति एवं समय हो उन प्रचलित सामग्रियों द्वारा भगवती

का पूजन करें। जो सामग्री न हो उसके अभाव में पुष्प, पुष्प के अभाव में अक्षत तथा अक्षत के अभाव में जल अर्पित करने से भी पूजा पूरी हो जाती है।

एकविंशत्युपचार- आवाह्न, स्वागत, आसन, स्थापन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, भूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, माल्य, आरति, नमस्कार एवं विसर्जन- ये इक्कीस उपचार हैं।

षोडशोपचार- आवाहन, स्थापन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, वस्त्र, भूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, आरति और प्रणाम- ये सोलह उपचार हैं।

दशोपचार- पाद्य, अर्घ्य, स्नान, मधुपर्क, आचमन, गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य- ये दस उपचार हैं।

पंचोपचार- गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य- ये पंचोपचार है। इनके द्वारा पूजार्चन करने से अखण्ड लाभ होता है और अन्त में साधक मुक्ति लाभ अर्जित करता है। स्थूल सामग्री के अभाव में मानसिक पूजन इस प्रकार करें।

मानसिक पूजन- ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश तत्त्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि तत्त्वात्मकं दीपं

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

दर्शयामि नमः। ॐ वं अमृततत्त्वात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। ॐ सौं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

बगलामातृकान्यास- 'अ' से लेकर 'क्ष' तक पचास अक्षरों को 'मातृका' कहते हैं। इन 'मातृका' वर्णों से ही समस्त मंत्रों का निर्माण हुआ है। 'मातृका' का अर्थ है माता अथवा जननी। ये समस्त मंत्र वर्णात्मक हैं और मंत्र परम शक्तिस्वरूप हैं। मातृकान्यास के मंत्रों द्वारा प्रत्येक अंग का स्पर्श करने से साधक के अंगों में देवता का वास हो जाता है जिससे साधना में किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं होता। इसके अतिरिक्त मंत्र शीघ्र जाग्रत होते हैं एवं देह में दिव्य ऊर्जा प्रतिष्ठित हो जाती है। अन्तर्न्यास केवन मन से निष्पादित किया जाता है। मन से उन-उन स्थानों में देवता एवं मंत्रवर्ण आदि को भावित किया जाता है। बहिर्न्यास में शरीर के स्थानों को स्पर्श किया जाता है। स्पर्श दो प्रकार से किये जाते हैं- किसी पुष्प से या अंगुलियों से। अंगुलियों का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है- प्रथम अंगुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर सभी अंगो का स्पर्श करने से। द्वितीय भिन्न-भिन्न अंगों के स्पर्श के लिये भिन्न-भिन्न अंगुलियों का प्रयोग किया जाता है।

ॐ अं ह्लीं बगलामुख्यै नमः शिरसि। ॐ आं ह्लीं स्तम्भिन्यै नमः मुखे। ॐ इं ह्लीं जिम्भृण्यै नमः दक्षनेत्रे। ॐ ईं ह्लीं मोहिन्यै नमः वामनेत्रे। ॐ उं ह्लीं वश्यायै नमः दक्षकर्णे। ॐ ऊं ह्लीं चलायै नमः वामकर्णे। ॐ ऋं ह्लीं अचलायै नमः दक्षनासापुटे। ॐ ॠं ह्लीं दुर्धरायै नमः वामनासापुटे। ॐ ऌं ह्लीं कल्पगायै नमः दक्षगण्डे। ॐ ॡं ह्लीं धीरायै नमः वामगण्डे। ॐ एं ह्लीं कल्पनायै नमः ऊर्ध्वौष्ठे। ॐ ऐं ह्लीं कालकर्षिन्यै नमः अधरौष्ठे। ॐ ओं ह्लीं भ्रामिकायै नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ औं ह्लीं मन्दगमनायै नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ अं ह्लीं भोगिन्यै नमः मूर्ध्नि। ॐ अः ह्लीं योगिन्यै नमः कण्ठे। ॐ कं ह्लीं भगाम्बायै नमः दक्षबाहुमूले। ॐ खं ह्लीं भगमालायै नमः दक्षबाहुकूपरि। ॐ गं ह्लीं भगवाहायै नमः दक्षबाहुमणिबन्धे। ॐ घं ह्लीं भगोदर्यै नमः दक्षबाहु अंगुलिमूले। ॐ ङ ह्लीं भगिन्यै नमः दक्षबाहु अंगल्युग्रे। ॐ चं ह्लीं भगजिह्वायै नमः वामबाहुमूले। ॐ छं ह्लीं भगस्थायै नमः वामबाहुकूपरि। ॐ जं ह्लीं भगसर्पिण्यै नमः वामबाहुमणिबन्धे। ॐ झं ह्लीं भगलोलायै नमः वामबाहु अंगुलिमूले। ॐ ञं ह्लीं भगाक्ष्यै नमः वामबाहु अंगुल्यग्रे। ॐ टं ह्लीं शिवायै नमः दक्षपादमूले। ॐ ठं ह्लीं भगनिपातिन्यै नमः दक्षपादजानुनि। ॐ

डं ह्ल्रीं जयायै नमः दक्षपादगुल्फे। ॐ ढं ह्ल्रीं विजयायै नमः दक्षपाद अंगुलिमूले। ॐ णं ह्ल्रीं धात्र्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे। ॐ तं ह्ल्रीं अजितायै नमः वामपादमूले। ॐ थं ह्ल्रीं अपराजितायै नमः वामपादजानुनि। ॐ दं ह्ल्रीं जम्भिन्यै नमः वामपादगुल्फे। ॐ धं ह्ल्रीं स्तम्भिन्यै नमः वामपादांगुलिमूले। ॐ नं ह्ल्रीं मोहिन्यै नमः वामपादांगुल्यग्रे। ॐ पं ह्ल्रीं आकर्षिण्यै नमः दक्षिणपार्श्वे। ॐ फं ह्ल्रीं उमायै नमः वामपार्श्वे। ॐ बं ह्ल्रीं रम्भिण्यै नमः पृष्ठे। ॐ भं ह्ल्रीं जृम्भिण्यै नमः नाभौ। ॐ मं ह्ल्रीं कीलिन्यै नमः उदरे। ॐ यं ह्ल्रीं वशिन्यै नमः हृदि। ॐ रं ह्ल्रीं रम्भायै नमः दंक्षासे। ॐ लं ह्ल्रीं माहेश्वर्यै नमः ककुदि। ॐ वं ह्ल्रीं मंगलायै नमः वामांसे। ॐ शं ह्ल्रीं रूणिण्यै नमः हृदयादिदक्षहस्तान्ते। ॐ षं ह्ल्रीं पीतायै नमः हृदयादिवामहस्तान्ते। ॐ सं ह्ल्रीं पीताम्बरायै नमः हृदयादिदक्षपादान्ते। ॐ हं ह्ल्रीं भव्यायै नमः हृदयादिवामपादान्ते। ॐ लं ह्ल्रीं सुरूपायै नमः हृदयादिजठरान्ते। ॐ क्षं ह्ल्रीं बहुभाषिण्यै नमः हृदयादि आननान्ते।

आवरण पूजा यंत्रार्चनम्- आवरण पूजा अर्थात् जिसमें देवता के साथ उनसे सम्बन्धित शक्तियों का सम्मिलित रूप से पूजनार्चन

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

किया जाता है। समय हो तो इस पूजन को नित्य सम्पन्न किया जाना चाहिये। इस पूजा के माध्यम से देवता सहित उनकी पारिवारिक शक्तियों की कृपा साधक पर सदैव बनी रहती है।

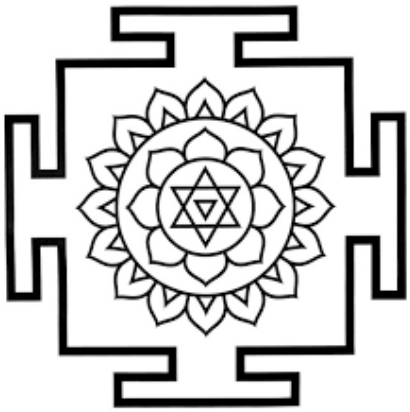

यंत्र को भगवती का विग्रह मानकर गंधाक्षत अथवा पुष्पादि से इस पूजा को सम्पन्न करना चाहिये। अगर यंत्र का अभाव हो तो एक सुन्दर पात्र में भगवती की प्रतिमा या चित्र को स्थापित कर आवरण पूजा करें। आवरणपूजा के कई विधान हैं, जो उपलब्ध हो अथवा जो गुरु की आज्ञा हो वही विधान सर्वोत्तम है। यह यंत्रार्चन सरलता से सम्पन्न किया जा सकता है। यंत्रार्चन करने से पूर्व प्रमुख देवताओं की आज्ञा व पूजन करना लाभकारी होता है। इस पूजन को किसी भी देवता के पूजन से

पूर्व सम्पन्न किया जा सकता है। गंधाक्षत अथवा पुष्प अथवा शुद्ध जल से यह पूजा सम्पन्न करें–

ॐ श्रीगुरुवे नमः, ॐ महागणपतये नमः, ॐ क्षेत्रपालायै नमः, ॐ वास्तुपुरुषायै नमः, ॐ नवग्रहायै नमः, ॐ पंचदेवेभ्यो नमः, ॐ लक्ष्मीवासुदेवायै नमः, ॐ एकादशरुद्रायै नमः, ॐ दशमहाविद्यायै नमः, ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः, ॐ कालायै नमः, ॐ महादुर्गायै नमः, ॐ भैरवायै नमः, ॐ ब्रह्मायै नमः, ॐ विघ्ननाथायै नमः, ॐ वेदशास्त्रायै नमः, ॐ रामायणायै नमः, ॐ भागवतायै नमः, ॐ पुराणायै नमः, ॐ ब्राह्मणायै नमः, ॐ दिक्पालायै नमः, ॐ सिद्धपीठायै नमः, ॐ तीर्थायै नमः, ॐ मंत्रतंत्रयंत्रायै नमः, ॐ पंचभूतायै नमः, ॐ सर्वऋषिभ्यौ नमः, ॐ सर्वपितृभ्यो नमः, ॐ सर्वदेवेभ्यो नमः, ॐ सर्वदेवीभ्यो नमः।

इसके उपरान्त् अपने हाथ में पीत पुष्प लेकर भगवती का ध्यानादि कर शंख का अर्घ्यपात्र स्थापित करें। मूलमंत्र से देवी की पूजा कर पुष्पांजलि समर्पित करें। तदनन्तर उनकी अनुज्ञा लेकर यंत्र पर आवरण पूजा करें।

"सविन्मये परा देवि पराऽमृतरस प्रिये।

अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चन मे।"

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

सर्वप्रथम यंत्र के त्रिकोण में मूलमंत्र द्वारा भगवती की पूजा करें। तत्पश्चात् त्रिकोण में इन मंत्रों से पूजन करें।

'ॐ सं सत्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ तं तमसे नमः।'

षट्कोणपूजा- ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

अष्टदल में अष्टभैरवों सहित अष्टमातृकाओं की पूजा- ॐ असितांग-ब्राह्मीभ्यां नमः। ॐ रुरु-माहेश्वरीभ्यां नमः। ॐ चण्ड-कौमारीभ्यां नमः। ॐ क्रोध-वैष्णवीभ्यां नमः। ॐ उन्मत्त-वाराहीभ्यां नमः। ॐ कपाली-इन्द्राणीभ्यां नमः। ॐ भीषण-चामुण्डाभ्यां नमः। ॐ संहार-महालक्ष्मीभ्यां नमः।

षोडशदल में मंगलादि शक्तियों की पूजा- ॐ मंगलायै नमः। ॐ स्तम्भिन्यै नमः। ॐ जृम्भिन्यै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ वश्यायै नमः। ॐ चलायै नमः। ॐ बलाकायै नमः। ॐ भूधरायै नमः। ॐ कल्मषायै नमः। ॐ धात्र्यै नमः। ॐ कलनायै नमः। ॐ कालकर्षिण्यै नमः। ॐ भ्रामिकायै नमः। ॐ मन्दगमनायै नमः। ॐ भोगस्थायै नमः। ॐ भाविकायै नमः।

भूपुर के पूर्वादि चारों दिशाओं में क्रमशः गणेश, बटुक, योगिनी एवं क्षेत्रपाल की पूजा- ॐ गं गणपतये नमः- पूर्वे। ॐ यं योगिनीभ्यो नमः- पश्चिमे। ॐ बं बटुकाय नमः- दक्षिणे। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः- उत्तरे।

भूपुर के बाहर दशदिक्पालों की पूजा- ॐ इन्द्राय नमः- पूर्वे। ॐ अग्नये नमः- आग्नये। ॐ यमाय नमः- दक्षिणे। ॐ निर्ऋत्ये नमः- नैर्ऋत्ये। ॐ वरुणाय नमः- पश्चिमे। ॐ वायवे नमः- वायवे। ॐ सोमाय नमः- उत्तरे। ॐ ईशानाय नमः- ऐशान्यां। ॐ ब्रह्मणे नमः- पूर्वेशानयोर्मध्ये। ॐ अनन्ताय नमः- पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये।

तत्पश्चात् दिक्पालों के आयुधों की पूजा करें- इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। अग्निसमीपे शक्तये नमः। यमसमीपे दण्डाय नमः। निर्ऋतिसमीपे खड्गाय नमः। वरुणसमीपे पाशाय नमः। वायुसमीपे आकाशाय नमः। सोमायसमीपे गदायै नमः। ईशानसमीपे शूलाय नमः। ब्रह्मणःसमीपे पद्माय नमः। अनन्तसमीपे चक्राय नमः। इस प्रकार आवरण पूजा सम्पन्न कर यथासम्भव मंत्र जप करें।

सर्वप्रथम बीजमंत्र से दीक्षा ग्रहण कर तत्पश्चात् क्रम से मंत्रों को ग्रहण करते हुए मूलमंत्र का चिन्तन करें। एक साधक ने

मुझसे बीजमंत्र एवं चतुर्क्षर के उपरान्त् अष्टाक्षरमंत्र को छोड़कर स्वतः ही भक्तमन्दार का जपारम्भ कर दिया। जिसके फलस्वरूप कई बार प्रयास करने पर भी उसका वह अनुष्ठान पूर्ण न हो सका। उसके उपरान्त् मैंने स्वप्न में दो दिन लगातार उसे डांटते हुए कहा- कि तूने अष्टाक्षरमंत्र को बिना ग्रहण किये ही आगे का क्रम शुरु कर दिया इसलिये तेरा अनुष्ठान पूर्ण नहीं हो रहा है जबकि वास्तव में मैं इस बात से अनभिज्ञ था। तब उसने मुझे फोन करके स्वप्न सुनाया और क्षमा मांगते हुए मुझसे अष्टाक्षर मंत्र ग्रहण किया। आरम्भ में इनकी उपासना में शरीर में भारीपन, गर्मी अथवा निद्रा की अधिकता रहती है।

श्रीबगलामुखी एकाक्षरमंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबगलामुखीएकाक्षरीमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, लं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ईं कीलकं श्रीबगलामुखी प्रसन्नतायै जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदि। ॐ लं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- ॐ ह्लां ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं ... तर्जनीभ्यां स्वाहा ... शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं ... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं ... अनामिकाभ्यां हुं ... कवचाय हुं। ॐ ह्लौं ... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ... नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः ... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- वादीमूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति। गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः श्रीनित्ये बगलामुखी प्रतिदिनं कल्याणी तुभ्यं नमः।।

मंत्र- 'ह्लीं'

त्र्यक्षर मंत्र- 'ॐ ह्लीं ॐ।'

चतुर्क्षर मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबगलाचतुरक्षरीमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, ह्लीं बीजम्, आं शक्तिः, क्रों कीलकं, श्रीबगलामुखीदेवताम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीबगलादेवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। आं शक्तये नमः पादयोः। क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

करन्यास एवं हृदयादिन्यास एकाक्षर मंत्र के समान हैं।

ध्यानम्- कुटिलालकसंयुक्तां मदाघूर्धितलोचनाम्। मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम्।। सुवर्णशैलसुप्रख्य कठिनस्तनमण्डलाम्। दक्षिणावर्त सन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसंयुताम्।। रम्भोरुपादपद्मां तां पीतवस्त्रसमावृताम्। एवं ध्यात्वा महादेवीं कुर्याज्जपमतन्द्रितः।।

मंत्र- 'ॐ आं ह्लीं क्रों।'

पंचाक्षर मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबगलामुखी पंचाक्षरमंत्रस्य श्री अक्षोभ्य ऋषिः, वृहती छन्दः, श्रीबगलामुखी चिन्मयी देवता, हूं बीजं, फट् शक्तिः, ह्रीं स्त्रीं कीलकं, श्रीबगलामुखी देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीअक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि। वृहतीछन्दसे नमः मुखे। श्रीबगलामुखीचिन्मयीदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। फट् शक्तये नमः पादयोः। ह्रीं स्त्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे।

ध्यानम्- प्रत्यालीढपरां घोरां मुण्डमालां विभूषिताम्। खर्वां लम्बोदरीं भीमां पीताम्बरपरिच्छदाम्।। नवयौवनसम्पन्नां पंचमुद्राविभूषिताम्। चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम्।।

खड्गकर्त्री समायुक्तां सव्येतर भुजद्वयां। कपालोल्पल संयुक्तां सव्यपाणि युगान्विताम्।। पिंगोग्रैक सुखासीनां मौलावक्षोभ्य भूषिताम्। प्रज्वलत् पितृभूमध्यगतां दंष्ट्रांकरालिनीम्।। तां खेचरां स्मेरवदनां भस्मालंकार भूषिताम्। विश्वव्यापकतोयान्ते पीतपद्मो परिस्थिताम्।।

मंत्र- 'ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्।'

सप्ताक्षर मंत्र- 'ह्रीं बगलायै स्वाहा।'

अष्टाक्षर मंत्र- विनियोगः- ॐ अस्य श्रीबगलाष्टाक्षरमंत्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रों कीलकं श्रीबगलाम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्- युवतीं च मदोद्रिक्तां पीताम्बरधरां शिवाम्। पीतभूषणभूषांगीं समपीनपयोधराम्।। मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम्। पानं पात्रं च शुचि बिभ्रतिं बगलां स्मरेत्।।

मंत्र- 1- 'ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा।'

2- 'ॐ ह्रीं श्रीं आं क्रों बगला।'

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

काम्य प्रयोग- बिल्ववृक्ष के मूल में दस हजार मंत्र जप करने वाला दारिद्रय भी महाधनवान हो जाता है। शमीवृक्ष के मूल में दस हजार जप करने से राज्य लाभ होता है। पीपल के मूल में दस हजार जप करने वाला जापक वेदशास्त्रों श्रेष्ठ ज्ञाता हो जाता है। बेर वृक्ष के मूल में दस हजार जप करने से वशीकरण व सम्मोहन कार्य सिद्ध होते हैं। औदुम्बर वृक्ष के मूल में दस हजार जप करने से साधक कुबेर तुल्य धनादिपति हो जाता है। कदली के मूल में बैठकर दस हजार जप करने से मनोवांछित भोग तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। सुपारी के फल में भगवती का आवाहन व पूजन कर फल को भगवती का स्वरूप मानते हुए दस हजार जप करने से साधक को खजाने की प्राप्ति होती है। किसी मनोहर पुष्पवाटिका में बैठकर दस हजार जप करने से साधक को राज्य लाभ होता है। पवित्र नदी के किनारे या संगम पर बैठकर विधिपूर्वक दस हजार जप करने से साधक को पुत्र-प्राप्ति के अतिरिक्त धन धन्यादि सुख प्राप्त करता है। सांख्यानतंत्र में अष्टाक्षर मंत्र के दस हजार जप का विधान निर्दिष्ट है, परन्तु दुर्भाग्य अधिक प्रबल हो तो इससे अधिक जप करना आवश्यक हो जाता है।

नवाक्षरमंत्र- 'ह्रीं क्लीं ह्रीं बगलामुखी ठः।'

एकादशाक्षरमंत्र-1- 'ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगलामुखि ठः ठः।'

2- 'ॐ ह्लीं क्लीं ह्रीं बगलामुखि स्वाहा।'

पंचदशाक्षरमंत्र- 'ह्रीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै स्वाहा'।

एकोनविंशाक्षर मंत्र (भक्तमंदार-विद्या)- यह मंत्र समस्त ऐश्वर्य व धनप्रदाता है। व्यापार बाधा, बेरोजगारी अथवा शत्रुषडयंत्र के द्वारा जीवन निर्वाह कठिन हो गया हो। इन सभी विकट परिस्थितियों में इस लक्ष्मीमंत्र का चिंतन करने से शीघ्र ही स्थिति अनुकूल होती है। आदि व अन्त में श्रीसूक्त के द्वारा भगवती का पूजन करने से विशेष लाभ होता है।

ध्यानम्- सुवर्णा भरणां देवि! पीतमाल्याम्बरावृताम्। ब्रह्मास्त्रविद्यां बगलां वैरिणां स्तम्भिनीं भजे।।

मंत्र- "श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले मे श्रियं देहि-देहि स्वाहा।"

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

सम्पुटितमंत्र- "श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले ततश्चाविरभूत् साक्षात् श्रीरमा भगवत्परा रंजयन्ति दिशः कान्त्या विद्युत् सौदामिनी यथा मे श्रियं देहि-देहि स्वाहा।' भक्तमंदार मंत्र को श्रीमद्भागवत् के आठवें अध्याय के आठवें मंत्र का संयोग कर जप करने से विपुल धन सम्पत्ति का लाभ होता है। कई बार असम्भव स्थिति में इस मंत्र का प्रयोग करने से चमत्कारिक लाभ देखा गया है।

त्र्यविंशाक्षरमंत्र- 'ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा।'

ध्यानम्- ॐ पीतशंख गदाहस्ते पीतचन्दन चर्चिते। बगले मे वरं देहि शत्रु संघ विदारिणी।।

षट्त्रिंशदक्षरी-मूलमंत्र- बगलामुखी मूलमंत्र को मंत्रराज कहा जाता है। मूलमंत्र में देवता के प्राण एवं देवता की विशिष्ट ऊर्जा विद्यमान होती है। इस महामंत्र से समस्त उपद्रवों एवं विघ्नों को शान्त कर सर्व कामनाओं को सिद्ध किया जा सकता है। पुरश्चरण के लिये 36 लाख जप विधिवत् करें।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगलामुखी षट्त्रिंशदक्षरी महामंत्रस्य, श्रीनारदऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, लं बीजम्, हं शक्तिः, ईं कीलकम्, श्रीबगलमुखीदेवताप्रसादार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीनारद ऋषये नमः शिरसि। बृहती छन्दसे नमः मुखे। श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदि। लं बीजाय नमः गुह्ये। हं शक्तये नमः पादयोः। ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।

करन्यास व हृदयादिन्यास- ॐ ह्लीं ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः। बगलामुखी ... तर्जनीभ्यां स्वाहा ... शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां ... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भय ... अनामिकाभ्यां हुं ... कवचाय हुं। जिह्वां कीलय ... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ... नेत्रत्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्। त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्वां च बिभ्रतीम्।। बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च समपीनपयोधराम्। पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम्।।

मूलमंत्र- 'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।'

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

श्रीबगलामुखी मालामंत्र- बगलामुखी मालामंत्र एक विशेष अस्त्र है, जिसके समुचित प्रयोग से साधक सर्व कार्यों को सिद्ध कर सकता है। साधारण कार्य के लिये 108 पाठ ही पर्याप्त हैं। विशेष संकटकाल में 1100 अथवा 11000 पाठ अवश्य करने चाहिये। तत्पश्चात् कामनानुसार दंशाश होम करें। इस उग्र विधान में नित्य शांति कर्म अनिवार्य हैं।

मालामंत्र- "ॐ नमो भगवति! ॐ नमो वीरप्रताप विजय भगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय-स्तम्भय, ब्राह्मीं मुद्रय-मुद्रय, बुद्धिं विनाशय-विनाशय, अपरबुद्धिं कुरु-कुरु, आत्मविरोधानां शत्रुणां शिरो ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरु पदाणुरेणु दन्तोष्ठ जिह्वा तालू गुह्य गुद कटि जानु सर्वांगेषु केशादिपादपर्यन्तं पादादिकेशपर्यन्तं स्तम्भय-स्तम्भय खें खीं मारय-मारय परमंत्र-परयंत्र-परतंत्राणि छेदय-छेदय आत्ममंत्रयंत्रतंत्राणि रक्ष-रक्ष ग्रहं निवारय-निवारय व्याधिं विनाशय-विनाशय दुःखं हर-हर दारिद्र्यं निवारय-निवारय सर्वमंत्रस्वरूपिणी सर्वतंत्रस्वरूपिणी सर्वशिल्पप्रयोग स्वरूपिणी सर्वतत्व स्वरूपिणी दुष्टग्रह भूतग्रह आकाशग्रह पाषाणग्रह सर्वचाण्डालग्रह यक्षकिन्नरकिम्पुरुषग्रह भूतप्रेत पिशाचनां शाकिनी डाकिनी ग्रहाणां पूर्वदिशां बन्धय-बन्धय वार्तालि मां रक्ष-रक्ष

दक्षिणदिशां बन्धय-बन्धय किरातवार्तालि मां रक्ष-रक्ष पश्चिम दिशां बन्धय-बन्धय स्वप्नवार्तालि मां रक्ष-रक्ष उत्तर दिशां बन्धय-बन्धय कालि मां रक्ष-रक्ष उर्ध्व दिशां बन्धय-बन्धय उग्रकालि मां रक्ष-रक्ष पातालदिशां बन्धय-बन्धय बगलापरमेश्वरि मां रक्ष-रक्ष सकल रोगान् विनाशय-विनाशय सर्वशत्रु पलायनाय पंचयोजन मध्ये राजजनस्त्रिवशतां कुरु-कुरु शत्रुन् दह-दह पच-पच स्तम्भय-स्तम्भय मोहय-मोहय आकर्षय-आकर्षय मम शत्रुन् उच्चाटय-उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।''

स्वप्न विद्या मंत्र- ''ॐ ह्रैं ह्रूं वाग्वादिनी सत्यं-सत्यं ब्रूहि वद-वद बगलामुखि ह्रैं ह्रूं नमः स्वाहा।''

स्वप्न विद्या मंत्र के बल से मनुष्य शुभ-अशुभ अथवा गुप्त रहस्यों की जानकारी अर्जित कर सकता है। पीतवस्त्र धारित कन्या अथवा स्त्री से अपने प्रश्न की जानकारी या संकेत प्राप्त हो सकते हैं।

सर्ववशीकरणमंत्र- 'ॐ नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्रीं ह्रीं सुमुखि बगले विश्वं मे वशं कुरु-कुरु स्वाहा।'

स्त्री वशीकरणमंत्र- 'ॐ बगलामुखी सर्व स्त्रीं हृदयं मम वश्यं कुरु ऐं ह्रीं स्वाहा।'

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

बगलाप्रत्यंगिरामंत्र- 'ॐ ह्लीं ज्वलज्जिह्वे बगला प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।'

श्रीबगलामुखी गायत्रीमंत्र- गायत्री मंत्र देवोपासना का महत्वपूर्ण अंग है जिसका जप, जापक को शक्तिनुसार अवश्य करना चाहिये।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगलागायत्रीमंत्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, ब्रह्मास्त्रबगलादेवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, विद्महे कीलकं, श्रीब्रह्मास्त्रबगलाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीबगलादेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। विद्महे कीलकाय नमः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय ... अंगुष्ठाभ्यां नमः। विद्महे ... तर्जनीभ्यां स्वाहा। स्तम्भन बाणाय ... मध्यमाभ्यां वषट्। धीमहि ... अनामिकाभ्यां हुम्। तन्नो बगला ... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। प्रचोदयात् ... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय ... हृदयाय नमः। विद्महे ... शिरसे स्वाहा। स्तम्भन बाणाय ... शिखायै वषट्। धीमहि ... कवचाय हुम्। तन्नो बगला ... नेत्रत्रयाय वौषट्। प्रचोदयात् ... अस्त्राय फट्।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ध्यानश्लोका- कौलागमैकसंवेद्यां सदा कौलागमाम्बिकाम्। भजेऽहं सर्वसिद्ध्यर्थं बगलां चिन्मयीं हृदि।।

गायत्री-1- 'ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्।'

2- 'ॐ ह्लीं बगलामुखी विद्महे दुष्टस्तम्भनी धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात्।'

3- 'ॐ बगलामुख्यै विद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात्।'

कामनानुसार बीजाक्षर से मंत्र को संपुटित करने का मंत्र शास्त्रों में वर्णन मिलता है। यथा- मोक्ष की कामना हेतु पूर्व में ॐ, सम्मोहन हेतु क्लीं, उच्चाटन हेतु ग्लौं, विद्यालाभ हेतु ऐं, वांछित कन्या हेतु सौः, स्तम्भन हेतु ह्लीं, विद्वेषण हेतु हुं-हुं, लक्ष्मी के लिये श्रीं, राजवशीकरण हेतु ह्रीं-ह्रीं, विषप्रयोग तथा ग्रहपीड़ा से शान्ति हेतु क्षीं, मारण कर्म हेतु हूं ग्लौं ह्लौं तथा भूमि लाभ हेतु ग्लौं का संयोग कर जप करने से कार्य सिद्ध होता है।

बगलाशाबर मंत्र- 1- "ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुख बन्धनं, ग्राममुख बन्धनं, कालमुख बन्धनं, चौरमुख बन्धनं, व्याघ्रमुख बन्धनं, सर्वदुष्टग्रह बन्धनं, सर्वजन बन्धनं, वशीकुरू हुं फट् स्वाहा।"

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

2- "ॐ सौ सौ सुता समुन्दर टापू, टापू में थापा, सिंहासन पीला, सिंहासन पीले ऊपर कौन बैसे? सिंहासन पीला ऊपर बगलामुखी बैसे। बगलामुखी के कौन संगी, कौन साथी? कच्ची बच्ची काक कुतिया स्वान चिडिया। ॐ बगला बाला हाथ मुद्गर मार, शत्रु हृदय पर सवार, तिसकी जिह्वा खिच्चै। बाला बगलामुखी मरणी-करणी, उच्चाटन धरणी, अनन्त कोटि सिद्धों ने मानी। ॐ बगलामुखी रमे ब्रह्माणी भण्डे, चन्द्रसूर फिरे खण्डे-खण्डे, बाला बगलामुखी नमो नमस्कार।"

ग्रहणकाल या पर्वकाल में 10 हजार जप से मंत्र सिद्ध करने के उपरान्त् मंत्र का प्रयोग करें। इसके माध्यम से समस्त व्याधियों एवं शत्रुओं का स्तम्भन होता है, वशीकरण कार्य सिद्ध होते है तथा मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

होम द्रव्य- वशीकरण- सुगन्धित द्रव्य युक्त तिलादि। वधू प्राप्ति- लाजा होम। अन्न लाभ- अन्न होम। स्त्री आकर्षण- हरताल। पुरुष आकर्षण- खजूर। धनलाभ- पंचमेवा, तिल, बिल्वफल, घृत एवं शहद। शत्रुनाश- काली मिर्च, काली सरसों, लोंग एवं तेल। रोगनाश- काली मिर्च, काली सरसों, जायफल, तिल, गिलोय एवं घृत। स्तम्भन- नमक के साथ हरताल एवं हल्दी की गांठे। मारण कर्म- चिताग्नि में सरसों का तेल तथा भैंस का रक्त (मारण मंत्रों से रात्रिकाल में)।

तपर्ण द्रव्य- शुभता एवं कृत्या शमन हेतु- गुड़ोदक। सम्मोहन एवं वशीकरण- सुगन्धित द्रव्य। विद्वेषण- कुएं के जल में नीम तथा मदार के पत्तों का रस। धनलाभ- पंचामृत। नारी आकर्षण- हरिद्रा मिश्रित जल। पुत्रप्राप्ति- शमन्त पुष्प मिश्रित जल। कृत्या निवारण- चन्दन मिश्रित जल। राज्यलाभ- कस्तूरी मिश्रित जल। मारण कर्म- कनेर के पत्तों से सुवासित जल।

यंत्र लेपन द्रव्य- राज्यलाभ- चन्दन। ग्रहशान्ति एवं कृत्यानाश- कस्तूरी। शत्रुनाश- सरसों का चूर्ण। स्तम्भन- हरताल या हल्दी। वशीकरण- सुगन्धित द्रव्य। आकर्षण एवं धनलाभ- फलों का रस। शत्रुनाश- काली मिर्च एवं त्रिफला चूर्ण। शांतिपुष्टि- शुद्ध घृत या मधु या केसर। विस्तृत विधान मैंने अपनी पुस्तक 'श्रीबगलामुखी दिव्य साधना' में दिया है।

श्रीबगलामुखी दशनामावलि- ॐ ह्लीं बगलायै नमः। ॐ ह्लीं सिद्धविद्यायै नमः। ॐ ह्लीं दुष्टनिग्रहकारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं स्तम्भिन्यै नमः। ॐ ह्लीं आकर्षिण्यै नमः। ॐ ह्लीं उच्चाटनकारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं भैरव्यै नमः। ॐ ह्लीं भीमनयनायै नमः। ॐ ह्लीं महेशगृहिण्यै नमः। ॐ ह्लीं शुभायै नमः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

श्रीबगलामुखी-बीजमंत्रयुक्त-अष्टोत्तरशतनामावली- विनियोगः-

ॐ अस्य श्रीपीताम्बर्यष्टोऽत्तरशतनामस्तोत्रस्य, सदाशिव ऋषिः, अनुष्टप् छन्दः, श्रीपीताम्बरी देवता श्रीपीताम्बरी प्रीतये जपे विनियोगः।

नामावलि- ॐ ह्लीं बगलायै नमः। ॐ ह्लीं विष्णुवनितायै नमः। ॐ ह्लीं विष्णुशंकरभामिन्यै नमः। ॐ ह्लीं बहुलायै नमः। ॐ ह्लीं वेदमात्रे नमः। ॐ ह्लीं महाविष्णुप्रस्वै नमः। ॐ ह्लीं महामत्स्यायै नमः। ॐ ह्लीं महाकूर्मायै नमः। ॐ ह्लीं महावाराहरूपिण्यै नमः। ॐ ह्लीं नरसिंहप्रियायै नमः।।10।। ॐ ह्लीं रम्यायै नमः। ॐ ह्लीं वामनायै नमः। ॐ ह्लीं बटुरूपिण्यै नमः। ॐ ह्लीं जामदग्न्यस्वरूपायै नमः। ॐ ह्लीं रामायै नमः। ॐ ह्लीं रामप्रपूजितायै नमः। ॐ ह्लीं कृष्णायै नमः। ॐ ह्लीं कपर्दिन्यै नमः। ॐ ह्लीं कृत्यायै नमः। ॐ ह्लीं कलहायै नमः।।20।। ॐ ह्लीं कलकारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं बुद्धिरूपायै नमः। ॐ ह्लीं बुद्धभार्यायै नमः। ॐ ह्लीं बौद्धपाखण्डखण्डिन्यै नमः। ॐ ह्लीं कल्किरूपायै नमः। ॐ ह्लीं कलिहरायै नमः। ॐ ह्लीं कलिदुर्गतिनाशिन्यै नमः। ॐ ह्लीं कोटिसूर्यप्रतीकाशायै नमः। ॐ ह्लीं कोटिकन्दर्पमोहिन्यै नमः। ॐ

ह्लीं केवलायै नमः।।30।। ॐ ह्लीं कठिनायै नमः। ॐ ह्लीं काल्यै नमः। ॐ ह्लीं कलायै नमः। ॐ ह्लीं कैवल्यदायिन्यै नमः। ॐ ह्लीं केशव्यै नमः। ॐ ह्लीं केशवाराध्यायै नमः। ॐ ह्लीं किशोर्यै नमः। ॐ ह्लीं केशवस्तुतायै नमः। ॐ ह्लीं रुद्ररूपायै नमः। ॐ ह्लीं रुद्रमूर्त्यै नमः।।40।। ॐ ह्लीं रुद्राण्यै नमः। ॐ ह्लीं रुद्रदेवतायै नमः। ॐ ह्लीं नक्षत्ररूपायै नमः। ॐ ह्लीं नक्षत्रायै नमः। ॐ ह्लीं नक्षत्रेशप्रपूजितायै नमः। ॐ ह्लीं नक्षत्रेशप्रियायै नमः। ॐ ह्लीं नित्यायै नमः। ॐ ह्लीं नक्षत्रपतिवन्दितायै नमः। ॐ ह्लीं नागिन्यै नमः। ॐ ह्लीं नागजनन्यै नमः।।50।। ॐ ह्लीं नागराजप्रवन्दितायै नमः। ॐ ह्लीं नागेश्वर्यै नमः। ॐ ह्लीं नागकन्यायै नमः। ॐ ह्लीं नागर्यै नमः। ॐ ह्लीं नगात्मजायै नमः। ॐ ह्लीं नगाधिराजतनयायै नमः। ॐ ह्लीं नगराजप्रपूजितायै नमः। ॐ ह्लीं नवीननीरदायै नमः। ॐ ह्लीं पीतायै नमः। ॐ ह्लीं श्यामायै नमः।।60।। ॐ ह्लीं सौन्दर्यकारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं रक्तायै नमः। ॐ ह्लीं नीलायै नमः। ॐ ह्लीं घनायै नमः। ॐ ह्लीं शुभ्रायै नमः। ॐ ह्लीं श्वेतायै नमः। ॐ ह्लीं सौभाग्यदायिन्यै नमः। ॐ ह्लीं सुन्दर्यै नमः। ॐ ह्लीं सौभगायै नमः। ॐ ह्लीं सौम्यायै नमः।।70।। ॐ ह्लीं स्वर्णभायै नमः। ॐ ह्लीं स्वर्गतिप्रदायै नमः। ॐ ह्लीं

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

रिपुत्रासकर्यै नमः। ॐ ह्लीं रेखायै नमः। ॐ ह्लीं शत्रुसंहारकारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं भामिन्यै नमः। ॐ ह्लीं मायायै नमः। ॐ ह्लीं स्तम्भिन्यै नमः। ॐ ह्लीं मोहिन्यै नमः। ॐ ह्लीं शुभायै नमः।।80।। ॐ ह्लीं रागद्वेषकर्यै नमः। ॐ ह्लीं रात्र्यै नमः। ॐ ह्लीं रौरवध्वंसकारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं यक्षिण्यै नमः। ॐ ह्लीं सिद्धनिवहायै नमः। ॐ ह्लीं सिद्धेशायै नमः। ॐ ह्लीं सिद्धिरूपिण्यै नमः। ॐ ह्लीं लंकापतिध्वंसकर्यै नमः। ॐ ह्लीं लंकेशरिपुवन्दितायै नमः। ॐ ह्लीं लंकानाथकुलहरायै नमः।।90।। ॐ ह्लीं महारावणहारिण्यै नमः। ॐ ह्लीं देवदानवसिद्धोघपूजितायै नमः। ॐ ह्लीं परमेश्वर्यै नमः। ॐ ह्लीं पराणुरूपायै नमः। ॐ ह्लीं परमायै नमः। ॐ ह्लीं परतंत्रविनाशिन्यै नमः। ॐ ह्लीं वरदायै नमः। ॐ ह्लीं वरदाराध्यायै नमः। ॐ ह्लीं वरदानपरायणायै नमः। ॐ ह्लीं वरदेशप्रियायै नमः।।100।। ॐ ह्लीं वीरायै नमः ।ॐ ह्लीं वीरभूषणभूषितायै नमः। ॐ ह्लीं वसुदायै नमः। ॐ ह्लीं बहुदायै नमः। ॐ ह्लीं वाण्यै नमः। ॐ ह्लीं ब्रह्मरूपायै नमः। ॐ ह्लीं वराननायै नमः। ॐ ह्लीं बलदायै नमः। ॐ ह्लीं पीतवसनायै नमः। ॐ ह्लीं पीतभूषणभूषितायै नमः। ॐ ह्लीं पीतपुष्पप्रियायै नमः। ॐ ह्लीं पीतहारायै नमः। ॐ ह्लीं पीतस्वरूपिण्यै नमः।।113।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

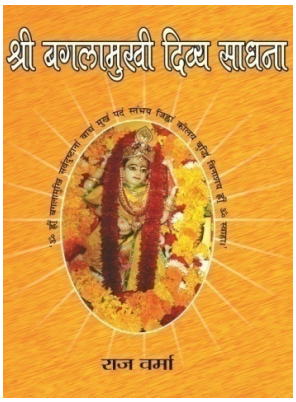

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com